मातृत्व का महन्मंगल आदर्श

जिजाऊ

जिज्याऊ

सेविका प्रकाशन

देवी अहल्या मंदिर धंतोली नागपूर - 440012

☎ 0712-2442097

मनोगत

जिजामाता - मातृत्व का महन्मंगल आदर्श। एक माँ अपने निश्चय से, अदम्य इच्छाशक्ति से पुत्र के द्वारा हिंदवी स्वराज्य स्थापना की स्वप्नपूर्ति कैसे कर सकती है इस का प्रत्यक्ष रुप है। अतः राष्ट्र सेविका समिति ने प्रारंभ काल से ही जिजाबाई को मातृत्व के आदर्श के रुप में माना है। उन के जीवन के कुछ अंश चित्रित करने का यह अल्प प्रयास।

पुत्र, प्रजावत्सल माता, मुत्सद्दी राजनीतिज्ञ, वीर, धर्म की वृद्धि, हिंदवी स्वराज्य स्थापना के आकांक्षा से ओतप्रोत इस जीवन को छोटीसी पुस्तिका में बांधना अतीव कठिन है।

पौष पौर्णिमा युगाब्द 5100 यह जिजाई की 401 वी जयंती। इस अवसर पर प्रकाशित यह पुस्तिका महिलाओं में हिंदुत्व का भाव भरें, मातृभाव अधिकाधिक वृद्धिंगत करें, उसकी परिधि बढ़ाये।

यह पुस्तिका आप तक पहुंचाने में जिनजिन का सहयोग प्राप्त हुआ सेविका प्रकाशन उनका ऋणी है।

प्रथम संस्करण
पौष पौर्णिमा युगाब्द 5100
(इ.स. 2/1/99)

- संपादिका

द्वितीय संस्करण
पुरुषोत्तम मास युगाब्द 5109
(इ.स. 17/5/2007)

जिजाऊ

विश्व में बहुत थोडे लोग उदात्त, उच्चस्तर के सपने देख सकते हैं। उन में से कुछ ही भाग्यवान लोगों के सपने साकार होते है। जिजामाता इन्हीं भाग्यवंतों में से एक। आपने हिंदवी स्वराज्य का सपना देखा-शिवबा की आँखों में रचा और वह प्रत्यक्ष होते हुए भी देखा।

इसी जन्म में देखा जिसने
हिंदु राज्य का मंगल क्षण
राष्ट्र भक्ती से पागल युवजन
संकल्पित फहराने उन्नत
हिंदु राष्ट्र का अजेय केतन

जिजाऊ का पुत्र शिवबा हिंदवी स्वराज्य का संस्थापक - इस देश के तारणहार। कवि भूषण इनका वर्णन करते है –

काशी हू की कला जाती, मथुरा मस्जिद होती।
शिवाजी न होता तो सुन्नत हो जाती सब हिंदुओंकी।

जिजाऊ शिवबा की देवता

स्वाभाविक ही शिवबा हिंदुओंकी देवता बन गये परंतु शिवा की देवता थी उनकी माँ जिजाबाई। माँ बेटे का प्रेम अनन्यसाधारण था। उन दोनों के जीवन इतने एकरस है की दूसरे का उल्लेख किये बिना किसी एक का ही जीवन लिखना असंभव है। जिजा माँ और शिवाजी दोनों के ताना बाना ने मिलकर हिंदवी स्वराज्य का महावस्त्र बुना। जिजाई यह 'शुभंकारी शिवाई' की दिव्य शक्ति मानी जाती है। वह शिवबा का सारसर्वस्व थी। वह उसकी माँ थी, गुरु थी, स्फूर्ति प्रेरणा थी, आधार और तत्त्वचिंतक भी थी। शिवा के कर्तृत्व की जड़े जिजाऊ की प्रखर धर्मभक्ति, अदम्य इच्छाशक्ति, जाज्वल्य राष्ट्र प्रेम से पुष्ट होती रही और उसी से हिंदुसाम्राज्य का वृक्ष फूला फला।

माँ का प्रोत्साहन और योग्य शिक्षा से स्वराज्य की सिद्धता हुई। अनेक संकटों का सामना करते हुए आपत्तियों को झेलते हुए, निरंतर स्वयं का सौभाग्य और स्वयं के पुत्र को दाँव पर लगाते-लगाते जिजाऊ ने स्वराज्य स्थापना के खेल में

निर्णायक विजय प्राप्त की। हिंदुधर्मयुद्ध की यज्ञ वेदी में अपने स्वयं के गृहसौख्य की होमद्रव्य के रूप में आहुति दी। इतिहास उसे वीरसू, राजमाता इत्यादि गौरवशाली स्पृहणीय उपाधियों से भूषित करता है। जिजाऊ अर्थात् परदास्यरूपी कृष्णघनघटा में चमकनेवाली दामिनी रूप है।

जन्मपूर्व परिस्थिति

जिजाऊ के जन्म के लगभग 750 वर्ष पूर्व इसवी सन् 711 में इस सुवर्णभूमि भारत पर मुस्लिमों का प्रथम आक्रमण हुआ। मुलतान के मंदिर में उन्हें 230 मण की मनुष्याकृति सुवर्ण मूर्ति और मूर्ति के नीचे 1320 मण सोना प्राप्त हुआ और इसी क्षण से सुवर्णभूमि के दुर्भाग्य के दिन प्रारंभ हुएँ। मुस्लिम बार-बार चढाई करने लगे। अकेले सोरटी सोमनाथ पर सोलह बार आक्रमण हुएँ। आदिलशाह, निजामशाह, कुतुबशहा, मुगल सत्ताधीश बन गये।

प्रजा हिंदु, सेना हिंदु उसे आदेश देता था कोई शाह लढते थे हिंदु, रक्तसिंचन करते थे हिंदु, धराशायी होते थे हिंदु और विजय मात्र होती थी शाह की। वे स्वयं को बादशाह कहलाते थे। वास्तव में जिनकी भूमि थी उन्हें कहते थ राजे, पर वे कुर्निसात करते थे शाह को। उन्हें मनसबदारी प्राप्त होती थी। भूमि में शौर्य था, वीर्य था फिर भी लोग मन से गुलाम थे। घरघर में रुद्राभिषेक, नवरात्रि होती थी पर भवन मंदिरों को (1) मस्जिदें बनायी जाती। भगवान की मूर्तियाँ और मंदिर के पत्थरों की मस्जिद में सीढियाँ बनायी जाती। उसे अनदेखा किया जाता था। उस की चीढ़ नही थी। क्रोध, उद्वेग नही था। प्रतिकार करने की बात ही दूर। निजी कलहो में परकियों का लाभ होने का भान नही था - उन के पैर चाटने की शरम नहीं थी।

हिंदुओं पर अपमानास्पद (2) झिजिया कर, कोकण में 'जकातें हिंदुवानी' लगाया था वह भी चूपचाप बिना प्रतिकार देते थे। 'मातृवत् परदारेषु' संस्कार की भूमि में माँ - बहनें सुरक्षित नहीं थी। दिन दहाडे अपहरण होता था। इज्जत लूटी जाती थी। हिंदू देखते रहते थे। मन संवेदनाहीन हुआ था।

---

1) पुणे जिले के आंबेगाव तहसील में घोडे गाव में एक पुरानी मस्जिद है। उसमें इ.स. 1586 में लिखा फारसी शिलालेख है -
हे मुहम्मद जनाब वीर मुहम्मद झमान ने खुद के कृपा के लिये तीस और तीन मंदिर ध्वस्त किये और इस खराबबाद में मस्जिद की नींव रखी।
मस्जिद खडी करने के लिये मंदिर तोडना यह आम मुस्लिमों का रिवाज था।

2) झिजिया कर - खलिफाने हिंदुओं पर वे इस्लाम के अनुयायी नहीं है इसीलिये लगाया था। औरंगजेब ने भी अपने कार्यकाल में यह कर लगाया था।

जिजाऊ का जन्म

सब प्रकार की ग्लानि से हिंदुसमाज व्याप्त था। ऐसे कालमें अमावस्या के कृष्ण रात में बीज के चंद्रकोर जैसी आल्हादक इस कन्या का जन्म चंद्रवंश के जाधव कुल में हुआ। यादव वंश यह कृष्ण का वंश उसी का आगे चलकर अपभ्रंश हुआ जाधव।

जिजा के जन्म का शुभदिन था - पौष पौर्णिमा पुष्य नक्षत्र (श्रीराम प्रभु का जन्म नक्षत्र) गुरुवार शके 1518 अर्थात् 12 जानेवारी 1598। विदर्भ के बुलढाणा जिले की मेहकर तहसील का 'सिंदखेड राजा' यह उनका जन्मगाव। म्हाळसाबाई और लखुजी जाधव ये माँ पिताजी, अचलोजी, दत्ताजी, राधोजी, बुधाजी ऐसे 4 भाईयों के पश्चात् जिजाऊ का जन्म हुआ। कन्या हो इसलिये माँ-पिताजीने मन्नत मांगी थी। स्वाभाविक ही वह बडे लाड-प्यार से पली।

पौर्णिमा का दिन पूर्ण चंद्र का दिन। आनंद, प्रसन्नता का दिन। चंद्र अपनी सभी कलाओंसहित पूर्णरुप से आकाश में चमकता है वैसी ही इस कन्याने क्षत्रियोंचित सभी गुणों के साथ जन्म लिया। उस के कारण घर आनंद से भरापूरा था।

लखुजी महत्वाकांक्षी और पराक्रमी थे। निजाम के दरबार में पंचहज़ारी मनसबदार थे। दौलताबाद की देशमुखी, 27 महल और 52 चावडियों के अधिकार तथा सिंदखेड, परतूर, खेरडे इत्यादि प्रांत निजी व्यय के लिये उनके पास थे वैजापूर, फुलंबर, पैठण भी उनके ही थे। इतिहास में लखुजी का वर्णन लखुजी जाधवराव देशमुख सरकार दौलताबाद सिंदखेडकर निजामशाही मनसबदार ऐसे किया गया है।

जिजा लखुजी की बडी लाडली थी। नित्य वह पिता के आसपास ही खेला करती थी। न्यायदान, सरदारों से बातचीत चलती तो वह पिता की गोद में बैठे-बैठे चूपचाप सुनती थी। कभी-कभी अनेक गहन प्रश्न पूछती थी। पिताजी भी उसे समझाते थे - छोटी आयु में ही सरदार, अश्वदल, मनसबदार, गोतमुख जैसे विविध शब्द उसे परिचित थे। उसकी चतुरस्त्रता, बहुश्रुतता वृद्धिंगत होती रही।

विवाहनिश्चय

एक दिन अचानक ही जिजा का विवाह निश्चित हो गया। रंगपंचमी का दिन था। गुलाल की थालियाँ सजी हुई थी। लखुजी के दरबार में सारे सरदार एकत्रित हुए थे। हमेशा जैसी जिजाऊ दरबार में खेल रही थी, मालोजी राजे भोसले भी अपने बेटे शहाजी को लेकर आये थे। दोनों ने परस्परों पर रंग उंडेल दिया। सभी को जोडी बडी पसंद आयी। यहीं मानो वाङ्निश्चय हुआ। लखुजी-मालोजी समधी बन गये। शहाजी जिजा पती पत्नी। रंगपंचमी नया रंग ले आयी। (इस प्रसंगपर इतिहास में काफी मतभिन्नता है।) शके 1526 में विवाह संपन्न हुआ।

भोसले कुलवृत्तांत

मालोजी भोसले के पुराण पुरुष शिवराम शिसोदिया वंश के थे। ये वंश ईश्वाकु वंश श्रीरामप्रभु का वंश है। शहाजी-जिजा के विवाह से सूर्य और चंद्र वंश का मीलन हुआ। मालोजी के दो पुत्र थे शहाजी और शरीफजी। वेरुळ में इनकी जमीन थी। वेरूळ, श्रीगोंदे व पुणे ये भोसले के महाराष्ट्र के वसतिस्थान। निजामशाही में कृषि व्यवसाय त्याग कर उन्होंने तलवार थाम ली। दौंड के निकट की भीमातीर पर बसी हुई पांडेपेडगाव की जहागिरी शहाजी के दादाजी ने प्राप्त कर ली थी। मालोजी राजनीतिज्ञ, पराक्रमी थे। धार्मिक, परोपकारी वृत्ति के भी थे। कहते है कि भगवान ने उन्हें दृष्टान्त दिया था की तुम्हारा वंशज हिंदु राज्य संस्थापक बनेगा देवी के वरदान स्वरुप उन्हें गुप्तधन भी प्राप्त हुआ था।

भोसले शिवजी के उपासक थे। सातारा जिले में शिखर शिंगणापूर नामक ग्राम है वहाँ के 'शिवजी' भोसले कुल की उपास्य देवता। प्रतिवर्ष चैत्र पौर्णिमा को यहाँ मेला लगता है। प्रदेश निर्जल था। अतः पर्वत को घेरकर मालोजी ने एक बडा तालाब बनवाया - छांव के लिये वृक्ष लगाये और वहाँ से दर्शनार्थी भक्तजन खा-पीकर जा सके ऐसी व्यवस्था की। वेरुळ के घृष्णेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार किया। (पूजा) अभिषेक आदि की खंडित परंपरा आगे सतत चलती रहे ऐसी व्यवस्था की पुजारी की नियुक्ति की। शिवालय तीर्थ बनाया। भगवान के प्रति श्रद्धा और धर्मकार्यों में आस्था यह इस वंश की विशेषता ही थी।

आपसी शत्रुत्व

मालोजी का अपनी बहु पर अत्याधिक प्रेम था। परंतु थोडे ही अवधि में इंदापूर के पास आदिलशाह से लडते हुए वे धराशयी हुए। शहाजी अब राजे बने। चाचाजी विठोजी का मायाछत्र शहाजी पर था। जिजा का मन पितासदृश ससुर के लिये कराह उठता था। कहते है मनुष्य के जीवन में जैसी घटनायें घटती है वैसा उस का स्वभाव बनता जाता है। जिजा के जीवन में भी ऐसा ही हुआ। किशोर आयु में ही मन को छू जानेवाले अनुभव आये, खून के रिश्ते पलक झपकते ही टूट गये, अपने ही शत्रु बन गये। साला-जिजाजी का मधुर रिश्ता अहि-नकुलवत् बन गया। बात ऐसी हुई -

दौलताबाद में खंडागळे सरदार का हाथी उन्मत्त हुआ। वह चीत्कार करते हुए सभी को पैरोंतले रौंदते हुए आगे बढ रहा था। जाधव उसे रोकने गये - बस् जाधव और भोसले में युद्ध छिड गया। जिजा का भाई चचेरे देवर के हाथ मारा गया। प्रतिशोध में लखुजी ने उस के दूसरे देवर को मारा। निजाम ने बीच में आकर दोनो को शांत करने का प्रयास किया। परिणाम स्वरुप लखुजी निजाम को छोडकर

मुगलों की सेवा में गये। आपस की इस शत्रुता से जिजा के मन को गहरी ठेस पहुंची। विनाकारण हुए इस खून खराबे से वे व्याकुल हुई।

जिजाऊ के जीवन में धूप छांव का ही खेल चलता रहा। सावन मास जैसा क्षण में सुख क्षण में दुख। किसी ना किसी कारण से उस के पिता और पति में लडाई झगडे चलते रहते क्योंकि अब दोनों के शाह अलग थे। पति की विजय पिता की हार थी और उस के पति की हार पिता को जयमाला पहनाती थी। किस के जय का आनंद मनाना और किस के पराभव का दुःख करना।

लडाई दामाद-ससुर की

शहाजी निजाम के जहागीरदार थे। उसका आधार स्तंभ माने जाते थे। निजाम के वजीर मलिकंबर का शहाजी राजापर आत्यंतिक विश्वास था।

मुगल और बिजापूर के आदिलशाह ने एक होकर निजाम पर आक्रमण किया दोनों की सेना अहमदनगर के पास 'भातवाडी' में आमने सामने आयी। निजाम की ओर से शहाजी और आदिलशहा की ओर से लखुजी। दोनों अपने रिश्ते भूल गये घनघोर युद्ध हुआ। शहाजी ने जान की बाजी लगायी। जाधवराव पीछे हट गये। परंतु इस विजय का पुरस्कार शहाजी को क्या मिला - उपेक्षा। मलिकंबर अंदर से डर गया, कल कहीं शहाजी अपने पर हावी न हो जाये।

शहाजी यह सहन नही कर पाये, वे अपनी जहागरी पुणे की ओर चले गये। आदिलशाह को पता चलनेपर आदिलशाहने उन्हें आमंत्रित किया। 'सरलष्कर' पद दिया। जिजाऊ के हृदय में मानों आग लगी थी। जिस से लडते हुए ससुर ने वीरमरण प्राप्त किया पति उसे ही जी हुजूर कहने लगा।

जिजाऊ की सोच

शहाजी साहसी थे युयुत्सु वृत्ति के थे। आदिलशाह की ओर से लडते हुए मलिकंबर का उन्होंने पराभव किया। जिजाऊ के मन को यह परिस्थिति चुभती थी। क्या मराठो का शौर्य 'शाहओं' के लिये लडता रहेगा। उनकी मर्जी-गैरमर्जी पर हमारा भाग्य डोलता रहेगा। एकनिष्ठा का उत्तर मानखंडना के रूप में मिलता रहेगा। कब तक हम दूसरों के विजय के लिये लडते रहेंगे। कबतक मरेंगे हम लाचारी की मौत? स्वयं के लिये, अपने धर्म के लिये, देश के लिये, माँ बहनों के लिये कब लडेंगे? कैसी बदलेगी यह मानसिकता वह सोचती रही -

भोसले, निंबाळकर, जाधव, घोरपडे सभी राजे कहलाते थे। परंतु उनकी आकांक्षाएँ कहाँ थी? उन की उपाधि नाम मात्र थी वे चाटुगिरी करते थे सुलतान की। वास्तव में मराठों की देवतायें भी घोडा और तलवार। मराठा युवक का प्रथम विवाह होता है तलवार से पश्चात् वधू से। परंतु आज यह वीरता, शूरता शाह की दासियाँ

बनी थी। दास का मन कभी अपना स्वयं का नहीं होता। सभी इंद्रिय होते है, बुद्धि होती है परंतु अभाव रहता है मन और देश-धर्म के मन का। जिजाऊ निरिक्षण करती थी कि आजकल अपने नाम में सुलतान लगाने में भी मराठो के मन में संकोच नहीं था। यादव वंश का देवगिरी दौलताबाद बन गया था। सभी मानबिंदुओं का अपमान हो रहा था। नहीं मनमें त्वेष था अपने बहुबेटियों की इज्जत लूटी जाने का। स्वत्व, स्वाभिमान, अस्मिता मराठे खो चुके थे।

जिजाऊ का मन तरस रहा था इन लोगों में चेतना जगाने के लिये। वह देशधर्म के अपमान को धोना चाहता था।

जिजाऊ का मायका उजड़ गया

जिजाऊ के पिता और भाई अचलोजी और रघुजी शाह को मुजरा करने के लिये दरबार में गये थे। विनाकारण ही भरेपूरे दरबार में उनकी निर्मम हत्या की गयी। जिजाऊ की माँ और भाई बहादूरजी, भाभीयाँ छिपते-छिपते सिंदखेड पहुंचे। भाभीयाँ सती गयी अपना ईमान दूसरों को बेचने का परिणाम कितना जानलेवा - कितना भयंकर -

एक सत्य की अनुभूति हुई, ईमान योग्य चरणों में समर्पित हो वह व्यक्ति अपनी हो। अपने राष्ट्रधर्म का अभिमान हो तो ही अपनी शक्तिबुद्धि का समर्पण सार्थ होता है। जिजाऊ सोचने लगी हमारी शक्ति बुद्धि को समुचित दिशा देनेवाले नेतृत्व की आज नितांत आवश्यकता है। शौर्य, धैर्यवीर्य सब कुछ नेता के अभाव में भटक रहा था।

सुनहरा सपना राख का ढेर बन गया

शहाजी और लखुजी रिश्ते में दामाद और ससुर पर आपसी मनमुटाव था। फिर भी रिश्ता था। दरबार में हुई इस हत्या से उनके घाव हरे हुए। शहाजी को स्मरण हुआ अपने भाई शरीफजी का, वह भी शाह के कारनामों का बली था। उन्होंने स्वयं ने भी तो कई अपमान सहे थे। आज तो इसकी परिसीमा हुई थी। आजतक का जीवन 'शाह' बदलने में गया। नाम और स्थान बदला तो भी गुणधर्म थोडे ही बदलते है। अपनी जहागीर स्वतंत्र करने की उन्होंने ठान ली। गुलामी ही सब आपत्तीयों की जड है। बादशाही के विरोध में उन्होंने निशान उठाया। 'परांडे' से लूट करते करते वे पुणे की ओर बढ़ने लगे। मालोजी के समय से 'पुणे' उनका अपना था। उन्होंने पुणे स्वतंत्र किया यह साहस असामान्य था। युद्ध तो छिड़ गया था। उस समय जिजाऊ गर्भवती थी अतः शहाजी उसे सुरिक्षत रखने हेतु शिवनेरीपर गये और इधर संतप्त आदिलशहा की ओर से रायाराव सेना लेकर आया। शहाजी के प्रदेश पर गधों को जोतकर हल चलाया। लोहे की सब्बल जमीन में गाड़ दी। फूटी

कौडी और टूटी चप्पल पुणे की सीमा पर लटका दी। प्रदेश जलाकर खाक कर दिया। पुणे प्रदेश नहीं अपितु शहाजी का सुनहरा सपना ही राख का ढेर बन गया।

शहाजी का नेतृत्व सक्षम था परंतु वे पुणे से दूर गये थे वह प्रदेश कोई संभाल नही पाया। स्वराज्य प्राप्ति का राजा का सपना प्रजा की आँखों में भरा नही था। अतः चंद क्षणों में वह मिट्टी में मिल गया।

जिजाऊ का चिंतन

शिवाई के कारण किले का नाम शिवनेरी था। शिवाई के सान्निध्य में जिजाऊ मन को बहलाती थी। भगवती शक्ति स्वरुपिणी असुरों के विनाश के लिये सिद्ध हुई उस समय समाज के प्रत्येक वर्ण ने, आश्रम ने, अपनी जीवनभर की साधना, तपस्या सर्वोत्तम सिद्धी निपुणता भगवती को समर्पित की थी। उसी से प्राप्त शक्ति से भगवती ने यश प्राप्त किया। समर्थ नेतृत्व, सक्षम सेना और समाज की समर्पण भावना का संयोग यश के लिये आवश्यक है। जिजाऊ का चिंतन आकार ले रहा था।

उन्ही दिनो में भोसले की कुलवधू खेलोजी की पत्नी जिजाऊ की देवरानी को नाशिक पंचवटी पर स्नान करते समय मुगल सैनिक महबतखान उठाकर ले गया। गोदावरी को सीता की याद आयी। उस समय जटायु जैसा गृध्र भी उसकी इज्जत बचाने के लिये अपने प्राण समर्पित कर गया। पर वह घटना द्वापार युग की अब इस कलियुग में कौन बचायेगा स्त्री की इज्जत। राजघराने की महिला की यह स्थिती तो सामान्य जनतापर क्या बीतती होगी। किस से मांगेगी वह न्याय। किस के सामने रोयेगी अपना दुखडा? कौन बनेगा उसका तारणहार? देश धर्म की परिस्थिति को मोड देना स्त्री के हाथ में है इतिहास के पन्ने इसके साक्षी है - सत्ययुग में अदिती ने वामन के द्वारा परिस्थिति को मोड दिया था।

"देवी शिवाई आप मुझे ऐसा सुपुत्र दीजिये जो राष्ट्रधर्म समाज का तारणहार बनेगा।" विश्व में शिवत्व की बहार लायेगा। नीति के साये में सब लोग सुख शांति से सो पायेंगे। जिजाऊ शिवाई से प्रार्थना करती थी।

इसी चिंतन के साथ जिजाऊ का उदरस्थ गर्भ दिन प्रतिदिन पल रहा था। उस ने अपनी संपूर्ण इच्छा-शक्ति, भावभावनायें उदरस्थ शिशु पर केंद्रित की थी गर्भस्थ शिशु का पोषण माँ के भोजन से निर्मित रस से होता है। माँ के परिधान के वस्त्रों के रंग का भी शिशु के वृत्तीपर संस्कार होता है। माँ की वाणी का, विचारों का पुट उसपर चढ़ता है।

जिजाऊ के मन में लावा उबल रहा था अधर्म के विनाश का, धर्म के प्रकाश का, प्रत्येक सांस हिंदुत्व के विजय का संकल्प करता था शिवाई के दर्शन करने जाते

समय पग-पग वामन के जैसा अपना प्रदेश अपने अधिकार में लाने के विचार से प्रभावित हुआ था। अतः गर्भस्य बालक भी जन्मा वह विजिगिषु वृत्ति का। जिजाऊ के अंतकरण में स्फुरण था देश-देव-धर्म की सुरक्षा का। उसी के स्पंदन से गर्भस्थ बालक पुष्ट हो रहा था। वही रक्त उसमें प्रवाहित हो रहा था। पांचवे महिने में गर्भ सांस लेने लगा - स्वराज्य स्थापना भगवान की इच्छा है - इसी विचार के प्रभाव से। प्राप्त होनेवाले समाचार के साथ कृष्ण शिष्टाई, चंद्रगुप्त, चाणक्य की कूटनीति बालक के अंग-प्रत्यंगोपर बरसती थी।

शिवबा का जन्म

फाल्गुन कृष्ण तृतीया को शके 1551, 19 फरवरी 1630 जिजाऊ ने इन सभी संस्कारों से अभिभूत बालक को जन्म दिया। मानों कृष्ण पक्ष में जन्म लेकर वह बता रहा था अकाली गुलामी की कृष्ण-रात समाप्त होगी - स्वराज्य का नया शक, नया संवत्सर प्रारंभ होगा।

शिवाई के सान्निध्य में उसकी कृपा से हुए बालक का नामकरण किया गया शिवाजी। यह उनकी छठवी संतान। सब से बडे पुत्र का नाम था संभाजी। उसके पश्चात् के 4 बालक गोद से ही उठ गये थे। संभाजी अभी लगभग 12 साल का था और अपने पिता के साथ ही लडाई में था। अतः अब जिजाऊ का आशा केंद्र था शिवाजी। शिवाजी का पालन, पोषण करते समय जिजाई अत्यंत सतर्क थी। उन दिनों में शिशु के लिये दूध माँ, धाय रखने की पद्धति थी। परंतु जिजाऊ को वह मान्य नही था। अपने शिशु का जीवन रस हीनवृत्ति, दास्यवृत्ति का न हो यही प्रामाणिक भावना थी। जिजाऊ उसे रामायण, महाभारत की इतिहास की कथाएँ बताती थी। सत्य, धर्म के लिये कैसा लडना, कठिन प्रसंगों में युक्ति से मार्ग कैसे निकालना। श्रीकृष्ण ने गोकुल में गोपालोंका समुह बनाकर गोसंवर्धन कैसे किया, राम के मन में गुरु के प्रति कितनी आस्था थी आदर था। नतमस्तक होना है तो गुरुजी के संमुख, माँ भवानी के सामने यवन सत्ता के सामने नहीं इत्यादि। ये विचार जिजाऊ अपने पुत्र के मन में भरती रही।

जिजाऊ की सतर्कता

शिवाजी महाराज तीन वर्ष के थे - तब त्रिंबक का किलेदार म्हालदारखान ने शिवनेरीपर चढ़ाई की। बालशिवाजी को पकडकर ले जाना यह उसका उद्देश्य था। जिजाऊ सतर्क थी। उसने शिवबा को पहले ही गुप्तरुप से शिवापूर भेज दिया। शिवाजी न मिलने पर उसने जिजाऊ को बंदी बनाया। उस को उसके चाचाजी जगदेवरावजी ने मुक्त किया।

जिजाऊ के लिये यह समय अतीव कठिन था। शिवाजी के जन्म के पश्चात् राज्य में अति भयंकर अकाल आया। 'सोना सस्ता अनाज महंगा' ऐसी स्थिती हुई। शहाजी राजे स्थिर नही थे अतः उन्हें शिवनेरी नगर, पेमगिरी, दौलताबाद, माहुली अनेक स्थानों पर शिवबा को लेकर भ्रमण करना पडा।

निरंतर माँ के सन्निध्य में रहने के कारण शिवबा के लिये वह ममता की साक्षात मूर्ति तो थी ही परंतु विश्वास का परमधाम भी थी। माँ भी बडी सतर्कता से उसका लालन पालन करती थी। माँ की सतर्कता का एक उदाहरण बडा मनोरम है - एक संगीतकार अपनी कला प्रस्तुत करने माँ के सामने उपस्थित हुआ माँ बेटे गीत सुन रहे थे। गीत था पद्मिनी की वीर गाथा का। सहसा शिवबा खडा हुआ। माँ ने पूछा - 'कहाँ जा रहे हो'?

'मैं यह भयंकर गीत सुन नही सकता,'

शिवाजी माँ इस से भी भयंकर घटना घट रही है अत्याचार का कहर हो रहा है। तुम्हारी चाची को मुस्लिम उठाकर ले गये। असहाय माताबहनों की चीख गूंज रही है और तुम गीत सुनने से कतराते हो?

'धैर्य से बैठो सुनो प्रण करो तुम्हे यह स्थिति बदलना है - स्त्री का सन्मान पुनः प्रस्थापित करना है - मातृभूमि की लाज बचानी है। - कायर मत बनो।

माँ ने बताया छोटा बालक है - मन कोमल है उसे आलस आया होगा 'जाने दो' की प्रवृत्ति माँ में नही थी। जो यशस्विता के लिये बाधक है। जिजाऊ के समर्थ हाथ शिवबा को आकार दे रहे थे और उधर शहाजी राजे निरंतर युद्ध में लगे हुए थे।'

शहाजीराजे की व्यस्तता

शिवजन्म के काल में ही उन्होंने मुगल की मनसबदारी स्वीकार की थी। वे इतने व्यस्त थे की शिवबा 8-10 महिने का होने के बाद ही उसे देख पायें। इ.स. 1632 में उन्होंने निजाम शाही की रक्षा का प्रयास किया। जुन्नर के समीप पेमगिरी में नयी निजामशाही स्थापन कर निजाम के बजीर के रुप में उन्होंने कार्यभार संभाला। परंतु दौलताबाद मुगलों ने जीत लिया। निजामशाही रक्षा के प्रयासों का अंत हुआ। इस से क्रोधित होकर शहाजी ने फिर से पुणे-चाकण, जुन्नर, नगर नेर, नाशिक त्रिंबक यह प्रदेश जीत लिया। सेना बढायी (1633)। शहाजहान से वे तीन वर्ष लडते रहे। आखिर थक कर माहुली के किले में आश्रय लिया। वहाँ भी मुगलों ने घेर लिया आखिर उन्हें समझौता करना पडा। अपने जहागीर का प्रदेश छोडकर अन्य सभी प्रदेश शाहजहान को देकर उन्होंने अपने को मुक्त किया।

विजापूरकर आदिलशहा ने शहाजी को अपनी सेवा में लिया। 1639 में सेनापती रणदुल्लाखान के सहाय्यक के रुप में उन्होंने जो पराक्रम किया उसके फलस्वरुप बंगलोर प्रदेश उनको भेट में मिला। बडे ठाठ बाट से वे बंगलोर में रहने लगे।

माँ के संस्कार

जिजाबाई और शिवाजी कुछ काल तक बंगलोर रहने के लिये गये। एक दिन शहाजी शिवबा को दरबार लेकर गये। शिवबा कुर्निसात करने के लिये तयार नहीं था। 'यवन राजा के सामने मै सर नही झुका सकता हूँ' दृढतापूर्वक शिवाजी ने बताया। बालक प्रणाम नहीं कर रहा है, क्या कानाफूसी हो रही है, यह बादशाह ने पूछा तब छोटा बालक है - दरबार की शान धान से घबडा गया है - मुरारपंत ने शहा को बताया।

एक दिन शिवबाने रास्ते पर कसाई गाय को मारने हेतु उसके पीछे दौडते हुए देखा। शिवबा सहन न कर पाया। उन्होंने दृढता पूर्वक उसे रोका, गाय को बचाया। एक बार शरीर पर पहने हुए गहने देकर गाय को छुडाया। माँ के संस्कार शिवबा को चुपचाप रहने नहीं देते। माँ को लग रहा था मेरे संस्कार उचित कार्य कर रहे है।

शहाजी को चिंता लगने लगी कैसे रह पायेगा शिवबा यहाँ। जिजाऊ भी शिवबा के कारण चिंतीत थी। चिंता दोनों की थी परंतु दृष्टिकोण भिन्न थे। जिजाऊ को लग रहा था कि दरबार की विलसिता में शिवबा कही खो तो नही जायेगा। शहाजी राजे शिकार, गीत, नृत्य आदि के शौकिन थे। उस जमाने का वह शैक था। मनोरंजन था। गर्व का विषय था। शहाजी के महल में नित्य नृत्यगीत होते थे। जिजाऊ को लगता था अपना बालक इस से दूर रहें। स्वराज्य स्थापना के स्वप्न को धूमिल करना उन्हें मंजूर नहीं था।

जिजाऊ शिवबा का पुणे प्रवेश

जिजाऊ-शहाजी ने विचार किया और दोनों माँ-बेटे बिजापूर से दूर पुणे में चले आये। पूर्व परंपरा से वह उनकी जागीर थी। बिजापूर के प्रतिनिधी के रुप में दादोजी, पेशवे के रुप में श्यामराज नीळकंठ और सोनेपंत डबीर इत्यादि साथ थे। उजाडे गये पुणे में जिजाऊ ने शिवबा को लेकर प्रवेश किया। शहाजी के स्वप्न की राख से ही हिंदवी स्वराज्य के फिनिक्स ने उडान भरी।

कादंबिनीव नजजीवनदानहेतुः। सौदामिनीव सकलारिविनाशनाय आलंबिनीवति राजगिरेदिदानी। जीजाभिदाजयति शहाकुटुंबिनी सा

कर्तृत्व की कुशलता

माँ बेटे-पुणे आये। पुणे की स्थिती भयंकर थी। लूटपाट के कारण सब त्रस्त थे। निर्धन भी थे। जिजाऊ ने वहाँ आते ही फूटी कौडी-टूटी चप्पल हटायी। शुभ मुहूर्त पर दादोजी ने शिवबा के द्वारा सोने का हल चलाया। माँ धरती की प्रार्थना की। लोगोंको सूचित किया इस भूमि का सुवर्णत्व उसे फिरसे प्राप्त कराऊंगी। विघ्नहर्ता मंगलमूर्ती का मंदिर कसबा में बसाया। विनायकभट्ट ठकार को गणेशजी की पूजा का कार्य सनदपूर्वक सौंपा - व्यय की व्यवस्था की।

माँ की ममता

एक दिन जिजाऊ ने प्रजाजन को बुलाया। उनसे सुख दुःख की बाते की। उन के पास खेती के साधन बीज आदि का अभाव था। खेती के समय आवश्यकतानुसार हल बैल और बीज दिये। लोगों ने मेहनत की। मातृभूमि ने भी माँ बेटे की प्रार्थना सुन ली फसल अच्छी आयी। किसान अनाज लेकर जिजाऊ के पास आये। माँ ने कहा - 'यह अनाज आप बीज के लिये अपने पास रख लीजीये और बच्चों को अच्छे से खिलाओ पिलाओ। जिजाऊ के शब्द सुनते ही किसानों की आँखों से आंसू झरने लगें। वर्षों से लूटपाट और आपत्तियों के कारण वे अर्धपेट ही रहते थे। आज माँ का छत्र जिजाबाई के रुप में प्राप्त हुआ। लोग उन्हें आऊसाहेब या माँसाहब संबोधने लगे। दूसरे वर्ष माँ ने उन्हें खेती के साधन और बैल खरीदने कहा। पश्चात् बहु बेटियों के लिये कपडे गहने-घरदार बनवाने हेतु उत्साहित किया। पाच वर्षों में घरपरिवार स्वस्थसंपन्न होने के बाद उन्होंने कर लेना प्रारंभ किया। अतः प्रजा के मन में उनके प्रति अतीव श्रद्धा निर्माण हुई। उस के रूप में उन्हें माँ ही मिल गयी। माँ का शब्द, इच्छा पूर्ण करने के लिये प्रजा तत्पर हो गयी।' प्रथम विवाह कोंडाणा का। तानाजी के शब्द उस श्रद्धा का जिवंत रुप है।

नवनिर्माण

पुणे आने के पश्चात् कात्रज घाटी के आगे खेडे बारे के पास जिजाबाईने एक महल बनवाया और गाव बसाया, उसे नाम दिया शिवापूर। बीच में आप वहाँ जाकर रहती थी। लोगों को भी वहाँ आकर मिलने में सुविधा होती थी। दुसरी बात पुणे राजधानी थी। सदैव परचक्र का भय था।

शिवापूर के पास जमीन खरीदकर तरह तरह के फल पेड लगाये, आम का बगीचा बनवाया। वही थी शाहबाग। पुणे से एक कोस दूरी पर 'पाषाण' गांव था। वहा भी नगर की नयी रचना की। वह बना जिजापूर। पास मे ही शिवालय था। उसका उद्धार किया। वैसे ही आगे बना संभापूर।

शिवापूर के समीप दो गाव थे केळवदे और रांझे। दोनो गांव जिजाऊ के स्वयं के खर्चे के लिये थे।

पुणे प्रदेश में शिवगंगा, भीमा, इंद्रायणी पवना और कऱ्हा नदियों के किनारे स्थित अनेक देवताएँ थी। जिजाऊ देवदर्शन के लिये निकलती-शिवबा साथ में रहता था। जिजाऊ उनके वर्षासन देती थी। आळंदी में भगवान की पूजा अर्चा, नंदादीप, भोग-समर्पण के लिये उन्होंने व्यवस्था की। चिंचवड में अन्नछत्र के लिये राशि दी। शिवबा का मन यह व्यवस्था देखकर प्रभावित होता था। केवल मंदिर बनवाना इतना ही नहीं अपितु उसका रखरखाव, उसकी सही मायने में व्यवस्था यह राजा का कर्तव्य है। यह बोध अनायास ही होता रहा।

शिवबा का शिक्षण

जिजाऊ शिवबा को राजा के रूप में तैयार करना चाहती थी। राजा प्रजा का नायक तथा सेवक भी होता है। उसमें कुछ विशेष गुण-बहुश्रुतता आवश्यक है यह सोचकर उन्हें शिक्षण देने की व्यवस्था की थी। शिवभारतकार कहते है -

श्रुति, स्मृति, पुराण, भारत, राजनीति, सभी शास्त्र, रामायण, काव्य, व्यायाम, वास्तुविद्या, फलज्योतिष सांग धनुर्वेद वैसेही सामुद्रिक, अन्यान्य भाषा, पद्य सुभाषित, हाथी घोडे तथा रथोमें स्वार होना, उनके लक्षण, चढना, उतरना दौड लगाना, छलांग लगाना, तलवार, धनुष्य, चक्र भाला, पट्टा, शक्ति, युद्ध बाहुयुद्ध, दुर्ग दुर्गम बनाना, दुर्गम स्थानों से छिपकर निकल जाना, निशान साधना, मन की गहराई तक पहुँचना अवधान रखना विष उतारना, तरह तरहकी रत्नपरिक्षाएँ, इन सभी विद्या, शास्त्र और कला में प्रवीण हुए और उन्होंने गुरु को यश दिया।

इस विद्याओं के साथ ही सादगीपूर्ण आचार चारित्र्य, स्वाभिमान साधु महात्माओं के प्रति श्रद्धा निर्माण की। ***सेना में नशीले द्रव्यों पर प्रतिबंध और किसी भी स्त्री का अपमान न हो ऐसा आचरण यह जिजामाता की ही सीख थी।***

युद्ध के लिये मावळे प्रदेश और उसमें रहने वाले उत्साही सशक्त शरीर के कृष्णवर्णी मावळे उसके साथी बने। नेता और उनके साथी यदि दुग्धशर्करा जैसे एकरूप हो जाते है तोही वे कुछ निर्माण कर सकते है। नेता अकेला ही बहुत आगे बढ गया - उच्च स्थिति प्राप्त कर लेगा तो दोनो में खाई रहेगी। नेता के सपने ध्येय उसे आकालन होने चाहिये।

अतः जिजाऊ मावळोंको भी पास बुलाती थी, उन्हें भी कहानियाँ बताती थी। शिवबा अकेला थोडे ही लडनेवाला था। उसका स्वप्न समझनेवाले, उसको साथ देनेवाले साथी मित्र होने चाहिये। यह भाव उनके मन मे था।

शिवाजी पूरे प्रदेश में उन्ही के साथ घुडसवारी करते थे। तैरना घाटियों में घूमना, तलवार दंड चलाना आदि। उसके सखा, सगे थे मावळे। ये सब अपने स्तर के नही अतः शिवाजी ने उनके साथ नही खेलना ऐसा भाव जिजाऊ ने कभी मन में नही रखा। अतः सुई के पीछे धागा जाकर जैसे कपडे के टुकडों को जोडता सिलता वैसे ही शिवबा के पीछे मावले चलते रहे और स्वराज्यरुपी वस्त्र तयार होते गया। जिजामाता शिवाजी को प्रोत्साहित करती थी। शिवबा का उन घाटियों में मुक्तसंचार था। मावळ की इंच-इंच भूमि वे पहचानते थे। इस प्रदेश के साथ उसका तादात्म्य स्वराज्य के लिये लाभदायक था।

हिंदवी स्वराज्य का संकल्प

परिणाम स्वरूप शके 1565 में केवल 15 वर्ष की आयु में शिवबा ने रोहिडेश्वर पर हिंदवी स्वराज्य का संकल्प किया। अपने रक्त का अभिषेक किया और तोरणा किलेपर भगवा ध्वज फहराया। 15 वर्ष की आयु में आज हमें अपना बालक छोटा लगता है। इस आयु की संतान आज सज्ञान भी नही मानी जाती।

विजापूरकर ने शिवाजी के इन क्रियाकलापों से क्रुद्ध होकर शिवाजी को साथ देनेवाले दादाजी नरसी को धमकाया। दादाजी को धीरज बंधाते हुए शिवाजी ने पत्र लिखा "श्री रोहिडेश्वर आपके क्षेत्र की कुलदेवता स्वयंभू है। उन्होंने हमे यश दिया और आगे वही सभी मनोकामनाएँ हिंदवी स्वराज्य निर्माण कर पूर्ण करेगी। यह राज्य हो ऐसी परमेश्वर की इच्छा है अधिक क्या लिखे -"

शशशृंग जैसा अप्राप्य लगनेवाले स्वराज्य की प्रतिस्थापना एक 15 वर्ष के किशोर के माध्यम से एक माँ ने साकार कर दिखायी। गड पर विजय पाने के पश्चात् अपने अधीन प्रदेशों का उत्पन्न विजापूरों को देने के बदले उन्होंने अपनी ओर लेना प्रारंभ कर दिया।

माँ एक प्रेरणास्त्रोत

माँ उसे खेलों खेलों में भी प्रेरणा देती थी। एक बार शिवबा और जिजाऊ चौसर खेल रहे थे। शिवबा ने पूछा क्या शर्त रखना? माँ को सामनेवाली खिडकी से कोंडाणा किले पर लहरनेवाला हरा झंडा दिख रहा था। परधर्मी, अन्यायी सत्ता की

---

1) सह्याद्रि के निकट की अस्ताचल की ओर की भूमि मावळ कहालाती है। मराठी मे अस्त के लिये शब्द है - मावळणे। जिस आरे सूरज डुबता है वह मावळ। जुन्नर के 12 और पुणे 12 अतः बारह मावळे संज्ञा प्रचलित है।

निशानी। माँ ने कहा "मेरी विजय होनेपर सामने जो झंडा फहर रहा है उसके स्थान पर केसरिया ध्वज फहराना होगा।"

और सन् 1647 में बापूजी मुग्दल नऱ्हेकर की सहाय्यता से कोंडाणा जीत लिया। जहागिरी का करोबार बढ़ता जा रहा था।

माँ का न्यायदान

पुणे में आने के पश्चात् न्याय देने का काम आदि वह प्रारंभ से ही करती थी। शिवाजी की उपस्थिति अनुपस्थिति में वे कारोबर देखती थी और आवश्यकतानुसार उस में परिवर्तन भी करती थी। उस के प्रमाण स्वरुप हमें कुछ पत्र प्राप्त होते है।

पत्र

हुद्देदार व मोकादम बेहरवडे - परगणे - पुणे

जमीन इनाम - महाराज शिवबा के पत्र के अनुसार चल रही है। अभी इनाम अनामत करने के लिये पत्र आया है। इनाम अनामत न करते हुए पूर्ववत् रखना शिवबा के पत्रानुसार व्यवहार नहीं करना।

चिरंजीव राजेश्री सीऊबाचे खुर्दखताचा उजुर न करणे (नहीं करना) ऐसा लिखा है।

पत्र के नीचे उनकी मुहर है। जिजाऊ की मुहर आम के आकार की थी।

जिजाऊ के मातृहृदय की अनुभूति होने के कारण उनके कार्यकाल में सब आश्वस्त थे। माँ ने प्रजा के हित को सदैव प्रधानता दी।

विठ्ठल गिरमाजी हवालदार को गोतमुख याने रिश्तेदारों से न्याय चाहिये था। माँ ने उस की इच्छा पूर्ण की। गोतमुख से न्याय दिलवाया।

इसवी सन् 1653 जेजुरी के गुरवों का न्याय शिवाजी महाराज ने माँ द्वारा करवाया शिवबा का माँ पर अत्यधिक विश्वास था। अपार निष्ठा थी। वह हमेशा कल्याण ही करेगी अतः उनका शब्द निर्णायक माना जाता था। 13 जुलै 1653 को शिवबा ने गुरव पंडित श्री मार्तंडभरैव जेजुरी को भेजे हुए पत्र में स्पष्ट शब्दों में लिखा है "गुरबातील मिराशीचा गरगसा होता त्याचा निवाडा मातृश्री साहेबी करुन सलासा करणे कौल दिला असे - तेणेप्रमाणे साहेबांचा हि कौल असे."

माँ ने निर्णय दिया है वही निर्णय मेरा भी है - वहीं मेरी राय है।

कई स्थानोंपर विश्वास दिलाते समय "मातोश्री चरणों की शपथ लेकर" ऐसा कहते थे।

माँ की माया - शीतल छाया

जिजाऊ के शब्दों का मूल्य अनेक घटनाओं से ध्यान में आता है। वह सबको संभाल लेती थी। अभय देती थी -

सन् 1590 में बाबाजी नाईक देशमुख मोरोपंत पेशवे को पत्र लिखा था कि वे अपने प्राण भय से मुह छिपाकर बाहर चले गये थे। अभी वे वापस आकर काम संभालना चाहते थे। उनको माँ ने लिखा -

अभय है - मोरोपंत जी अपना मुतेलिक भेजेंगे आप भी अपना मुतलिक भेज देना देशस्थिति रखने का अपना काम संभालना। हमारी ओर से आप को कुछ भी नुकसान नही पहुचेगा। किसी भी तरह का भय न रखना। आनाकानी नही करना। अभय है।

माँ के साये में आश्वासकता की श्रेष्ठ शक्ति रहती है इसका और एक नमुना-

विठोजी हैबत राऊ सिलंबकर देशमुख के कन्या का विवाह निश्चित हुआ उनकी सांपत्तिक स्थिती अच्छी नहीं थी। शिवबाने विठोजी और उनकी माँ को बुलाया था - उन्होंने निवेदन किया कि अभी हमारे भोजन का ठिकाना नहीं हम विवाह कैसे करेंगे -

जिजाऊने उन्हें साडी के लिये 25 होन और 500 लोगों के भोजन की सामग्री दी। "आप सुख शांति से शुभ कार्य करना कोई आशंका न रखना।"

रंगो गणेश सोनटक्के कुळकर्णी हिसाब देने के लिये कोंडाणा गये थे। वही उनका देहांत हुआ। माँ को कृपावंत होने के लिये उनकी बहू भानाबाई ने पत्र लिखा। जिजाऊ ने शिवबाभुळगाव की लगभग एक सौ बीस बिघा जमीन वंश परंपरा से चुडियाँ और सिंदुर के लिये दानपत्र बनाकर दी।

सबक सिखाना

उचित शब्दों में आज्ञा यह जिजाऊ के पत्र की और एक विशेषता ध्यान में आती है।

यमाजी शिवदेव ने जावळी प्रांत में सेना भेजकर दंगाफसाद किया। सिलीमकर - गुंजनमावळ ने पत्र भेजकर पारिपत्य करने की आज्ञा माँगी। अत्यंत स्वच्छ शब्दों में उन्हें माँ ने पारिपत्य की आज्ञा दी - वह पत्र उनके वीरवृत्ती का द्योतक है -

कंक मालुसारे, खोपडे, जेधे एकत्रित होकर मोरो धोंडो देव सुभेदार, आप्पाजी पारठे समस्त सरदार संमिलित होकर शत्रु को नष्ट करना। अपनी सेवा से राजा को संतोष होगा ऐसा करना। स्वामीसेवा एकनिष्ठा से करने से राजा (शिवाजी) आप का भला ही करेंगे, ऊर्जितावस्था प्रदान करेंगे। यह विश्वास रखकर शत्रु को सबक सिखाना।

प्रसंगविशेष पर कडे शब्दों में डाँट भी लगाती - पुणे परगणे के देशकुळकर्णी बाबाजी देशपांडे - मुकुंद कान्हो देशपांडे के कारोबार में हस्तक्षेप करने लगे। शिवबाने उन्हें खरीखोटी सुनायी दुसरे दिन माँ का भी पत्र गया।

"नसते कथले केलिया चिरंजीव (शिवबा) काही कोन्हाचा मुलाहिजा करणार नाहीत ऐसे समजाने घस घस न करणे पेस्तर बोभाट आला म्हणजे बोल नाही."

आपकी हरकतों का परिणाम ठीक नहीं होगा शिवबा किसीका मुलाहिजा नही करेगा।

पुरंदर किला लेते समय भी जिजाऊ ने अपनी कठोरता का परिचय दिया। पुरंदर के गडकरी नीळकंठजी का देहांत हुआ। वे शहाजी के मित्र थे। उनके पुत्र आपस में लडते थे। अतः किला मुस्लिमों के हाथ जाने की संभावना थी। शिवाजी ने पत्र लिखकर उनके आधार की स्वयंको आवश्यकता है ऐसा जताया। जिजाऊ शिवबा सेना लेकर उनके किले के नीचे रहने के लिये गये। दीपावली के पर्व पर शिवाजी किलेपर भोजन के लिये गये। तीनों भाईयों को कैद किया बंदी बनाकर एक साथ रखा। आपस में बातचीत कर अलग अलग वतन चाहिये या सब आपस में मिलजुलकर रहेंगे यह तय करने के लिये बताया। बालबच्चे और महिलाओं को नीचे भेज दिया। चौथे दिन भाईयों को छोड दिया। सबने मिलजुलकर रहने का मान्य किया। गाव इनाम दिये वस्त्र दिये। पुरंदर स्वराज्य का महत्त्वपूर्ण किला बन गया।

शिवबा के मामा अर्थात् उनकी सापत्न माता तुकाई के भाई संभाजी मोहिते स्वराज्य स्थापना के अनुकुल नही थे। अतः अतीव चातुर्य से शिवबा ने उन्हें दूर किया। त्यौहार के उपलक्ष्य पोस्त माँगने शिवबा वहाँ गये। पोस्त में 'सुपे परगणा' माँग लिया। आना कानी करने पर उन्हें बंदी बना लिया। संपत्ति जप्त कर ली और वे बात मानते नही यह देखकर सेना के साथ शहाजी महाराज के पास बंगलोर भेज दिया। रिश्तेनाते भी स्वराज्य कार्य में बाधा नही डाल सके। माँ का मौन आधार शिवबा की वज्र शक्ति बना।

स्वराज्य या सौभाग्य

शिवबाने पराक्रम से अनेक दुर्ग जीत लिये उनके पराक्रम की कहानी विजापूरकर तक पहुंची तब उसे रोक लगाने हेतु 'शाह' ने उनके दरबार के सरदार शहाजी राजे - शिवबा के पिता को बंदी बनाया। पैरों में बेडियाँ डालकर विजापूर के रास्तों में घुमाया। उन्हें लगा शिवबा शरण आयेगा। पिताजी के प्राणों की भीख मांगेगा।

उधर फर्रादखान बंगलोर पर सेना लेकर आया परंतु शिवबा के बडे भाई संभाजीने उसके दांत खट्टे किये। 'खान' ने फिर मुडकर भी नहीं देखा।

जिजाऊ का मन व्याकुल था। उसके पिताजी और भाई दरबार में ही मारे गये थे। अब पति और ज्येष्ठ पुत्र दाँव पर लगे थे। प्रश्न था 'स्वराज्य या सौभाग्य?' परिक्षा का कठिन समय था। परंतु व्यक्तिगत भावनाओं से ऊपर ऊठकर स्वराज्य को उन्होंने अग्रक्रम दिया। दिल्ली बादशाह से संधान बांधकर उनका दबाव विजापूर

पर लाया। कोंडाणा, कंदर्पी व बंगलोर के गड देने की शर्तपर शहाजी की मुक्तता की गयी। कोंडाणा देने का दोनो माँ पुत्र को अत्यंत दुःख हुआ। जिजाऊ का स्वराज्य और सौभाग्य दोनों सुरक्षित रहे।

तेजस्वी तारा टूट गया

परंतु ये आनंद अधिक दिन टिक न पाया। कनकगिरी युद्ध के समय अफझलखान के साथ संभाजी को भेजा गया था। संभाजी शूर था सिंह का छावा था। अफझलखान उसकी तेजस्विता सहन नहीं कर पाता था। अतः उसने उसकी कोई मदद नहीं की। इस युद्ध में संभाजी तोप के गोले का शिकार हो गए। एक तेजस्वी तारा टूट गया। जिजाऊ का अभी एक ही पुत्र शेष रहा - शिवबा।

शिवबा के स्वराज्य में 40 दुर्ग थे। विजापूरकरों के लिये यह आँखों की किरकिरी थी शहाजीने तो यह मेरा पुत्र है परंतु मुझ से अलग हुआ है। यहाँ से भाग गया है। आप की जो भी मर्जी है वह कर सकते है - ऐसा बताया।

अफजल आया बनने अफजल

सेनापती अफजलखान को शिवाजी को पकडने के लिये भेजा गया। खान के पास बारा हजार अश्व, दश सहस्त्र पदाति, 1200 ऊंट और उतनी ही तोपें थी। खान बडा क्रूर था। 'कुफ्रशिकन' काफरों को तोडनेवाला यह उसकी उपाधि थी। पुणे की ओर बढ़ते हुए खान ने पंढरपुर तुळजापूर के मंदिरों को ध्वस्त किया।

जासूसों से पता लगते ही शिवबा ने मंत्रिमंडळ की राय ली। जिजाऊ भी उपस्थित थी। मंत्रिमंडल को लगता था खान की अपार सेना से जूझना कठिन है उस से संधि करें।

संभाजी का प्रतिशोध लेना

अफझलखान जीवित वापिस नहीं जाना चाहिये यह माँ का आग्रह था। पति का अपमान और पुत्र की हत्या यह उसके दो शल्य थे जो रात दिन उसे चुभते थे। उन शल्यों का मूलकारण अफझलखान ही था। शायद माँ का आदर्श द्रौपदी थी जिसने अपमान का बदला चुकाने के लिये एडिचोटी एक की। अतः अविचल मन से उसने शिवबा को एक ही बात बतायी -

बुद्धि से कार्य करना, संभाजी का प्रतिशोध लेना।

शिवबाने माँ की इच्छा पूर्ण की। योजनानुसार शिवबाने प्रतापगड पर खान की भेट ली। मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी (10-11-1659) खान का सर काटकर राजगड पर माँ को दिखाने के लिये भेज दिया। देव, धर्म, राष्ट्र, पिता और भ्राता के अपमान का बदला लेनेवाले पुत्र पर उन्हें गर्व होने लगा। जिसके लिये क्षत्राणी वीर पुत्र को

जन्म देती है वह सार्थ हुआ था। मिठाई बांटकर - नगारे कर्णे बजाकर तोपों के आवाज कर उन्होंने आनंदोत्सव किया।

खान का सर सन्मान पूर्वक राजगड के दरवाजेपर एक कोनाडे में बिठाया। मृत्यु के पश्चात् बैर समाप्त हो जाता है।

जिजाऊ की मानसिकता

शिवबा जिजाऊ का प्राण था। उसे खान से लडने के लिये भेजना अर्थात् कराल काल के मुंह में भेजने जैसा था। कुछ विपरित हो जाता तो जल बिना मछली जैसी वह छटपटाती रहती। राजगड पर शिवाजी आये तब माँ ने अलाबला लेते हुए कहा - संभाजी का प्रतिशोध लिया - मेरी कांक्षा पूर्ण हुई। पराक्रम किया। भाग्य अच्छा था अतः भेट हुई। आज का दिन सुवर्ण दिन है।

प्रसन्नचित्त से जिजाऊ ने शिवबा के साथ जो जो थे उन्हें इनाम दिये सुवर्ण के कंगन, वस्त्र, आभूषण पालखी, अब्दागिरी अनेक मानसन्मान प्रदान किये। शिवबा विजयी होकर आया इस से बढ़कर कोई खुशी नहीं थी।

काव्य तयार किया

अफझलखान का वध होने के बाद उसकी लक्षावधि रुपयों की संपत्ति, शस्त्रास्त्र शिवबाने प्राप्त कर लेना यह यवन सत्ता की नीव हिलानेवाली घटनायें थी। अभी चक्र परावर्तित होने लगा था। मुस्लिमों के जय का चक्र उलटा घुमने लगा। हिंदुओं की विजय होने लगी थी यह हिंदुओं में आत्मविश्वास निर्माण करनेवाली एवं बढ़ानेवाली, नयी उमंग भरनेवाली - स्वराज्यस्थापन सुलभ करनेवाली शक्ति थी। यह बात राज्य के कोने-कोने में पहुंचनी आवश्यक थी। उस समय के प्रचार माध्यम थे - शाहिर और भाट। जिजाऊ ने अज्ञानदास शाहिर को आमंत्रित किया और अफझलखान समरप्रसंग पर काव्य तयार करने का आदेश दिया (जिसे मराठी में पोवाडा कहते है) हिंदुत्व के विजय निनाद घर-घर में गुंजे, सुप्त मन में चेतना जगे और अधिकाधिक लोग स्वराज्यसिद्धि के प्रयास में जूट जायें यह उनकी आकांक्षा थी।

पोवाडा सुनने के बाद उन्होंने शाहिर को एक घोडा और एक सेर सोने का तोडा (कंगन) दिया। अज्ञानदासजी लिखते है 'राजगड शिवाजी का। प्रतापगड जिजाऊ का।'

शुद्धिकरण अद्भुत क्रांति

विजापूरकर शहा ने शिवाजी के स्वराज्यस्थापना से उत्तेजित होकर जो अनेक कृष्ण कृत्य किये उनमें से एक है शहाजी राजा का अवमान और दुसरा ***शिवाजी के साले का बजाजी निंबाळकर का धर्मांतरण। बजाजी निंबाळकर के***

धर्मांतरण से विचलित न होते हुए जिजामाताने उसका शुद्धिकरण कर के एक नया मार्ग प्रशस्त कर यवन सत्ता के मानो पैर ही काट दिये।

अफझलखानने बजाजी से 60 हजार होन लेकर उसकी मुक्तता की परंतु मुस्लिम बनना होगा यह शर्त रखी। प्राणत्याग अथवा धर्मत्याग दो ही पर्याय थे। धर्मत्याग से दुःख तो अवश्य होता था परन्तु स्वधर्म में वापिस आना मुश्किल था।

यवनों ने हिंदुओंपर 800 वर्ष अत्याचार किये। हिंदुसमाज की दीर्घकालीन हानि की धर्मांतरण नें। सोमनाथ के लिये हम 16 बार लड़े, मुस्लिमोंने जिता हुआप्रदेश बारबार उनसे वापिस लिया परन्तु अपने धर्म से खींचकर ले गये बांधवों को फिरसे हिंदु बनाने का प्रयास नहीं हुआ। अपितु अपने धर्म में उन्हें लेने का विरोध ही होता था। आज की कश्मीर समस्या उसीका प्रत्यक्ष रूप है।

माँ ने बजाजी की शिखर शिंगणापूर में भेट ली हिंदुधर्म में वापस आने का आग्रह किया। बजाजी का अपराध नहीं है यह समाज को भी जताया। शिखरशिंगणापूर के उपाध्याय से धर्मशास्त्रविहिन शुद्धिकार्य संपन्न किया। उस निमित्त से उन्हें प्रतिवर्ष दो सौ रुपयों का इनाम दिया। शुद्धिकार्य के लिये समाज की मान्यता आवश्यक थी। वैसी समाज से एकरूप होने के लिये उसे मूल समाज में समा लेना आवश्यक था। इसलिये बजाजी के पुत्र के साथ अपनी पोती सखूबाई का विवाह संपन्न किया। वाल्हे का पाटील बनाया और शुद्धिकरण को समाज प्रतिष्ठा दी।

बजाजी निंबाळकर का शुद्धिकरण यह महान क्रांति है। बेटा रणक्षेत्र में बिजापूरकरों को हराता रहा। माँ ने धार्मिक स्तर पर उसका पराभव किया। चारों अधिसत्ताओं के लिये यह गंभीर चुनौती थी। जिजामाता का यह साहस और कर्तृत्व अतुलनीय है।

पाशवी अत्याचार छलकपट से विधर्म में गये लोगों को स्वधर्म में आने का रास्ता - महर्षि देवल, भाष्यकार मेधातिथी के 500 वर्ष पश्चात जिजाऊ ने खुला कर दिया। अब वह एक संकरी गली या पगडंडी नही था राजमार्ग बन गया। राजा के अष्टप्रधानों में से पंडितराव के पास धर्मविषयक जो कार्य थे उसमें से शुद्धिकरण यह महत्त्व का कार्य था।

नेताजी पालकर, हुतात्मा बाजीप्रभु देशपांडे के सुपुत्र पिलाजी, रामाजी नरसी देश कुलकर्णी का बेटा शामाजी का शुद्धिकरण पंडितजी के विभाग की ओर से किया गया।

धर्मांतर अर्थात् राष्ट्रांतर - यह सूत्र ध्यान में लेकर जिजाऊ ने स्वराज्य स्थापना के प्रारंभ में शुद्धिकरण कार्य प्रारंभ किया। मुस्लिम सत्ताधीशों की ओर से सदियों से चलते आ रहे धार्मिक आक्रमण पर यह कठोर प्रहार था।

स्वप्न हुआ साकार

सुप्रसिद्ध लेखक श्री. बाळकृष्णजी ने जिजाऊ का वर्णन - In one word she had the head of a man over the shoulders of a woman -

जिजाऊ अतीव दृढनिश्चयी थी। मन मानों वज्र जैसा मजबूत था। नित्यनूतन कठिन प्रसंग आते थे और वह उससे मुकाबला करती थी। श्रद्धा के आधार पर कठिन से कठिन प्रसंगों में वे अविचल रही। पर कभी मन्नत नहीं मांगी। ईश्वर भरोसा और स्वयं का पुरुषार्थ यह जीवन का सूत्र था।

इ.स. 1659 में अफझलखान वध के पश्चात् शिवबा ने 18 दिनों में वाई से कोल्हापूर तक का 100 मीलों का प्रदेश एवं पन्हाळा किला पादाक्रांत किया। मिरज को घेरा डाला। मिरज आदिलशाह की दृष्टिसे अतीव महत्त्वपूर्ण था। अतः विजापूरकर ने सिद्दी जोहार को 15 हजार सेना लेकर भेजा। 2 मार्च 1660 को शिवबा ने पन्हाळा पर आश्रय लिया। चार माह से अधिक समय तक शिवबा वहाँ से निकल न पाए। अनाज बारुद आदि सब सामग्री समाप्त होने लगी। बाहर से मदद भी समय पर पहुंच नहीं रही थी। इधर औरंगजेब का मामा शाहिस्तेखान पुणे में लाल महल कब्जे में लेकर बैठा था। जिजाऊ राजगड पर थी। उनकी आज्ञासे मराठों की टोलियाँ मुगल सेना पर पीछे से आक्रमण करती थी। पर शहिस्तेखान हटा नहीं।

रणरागिणी जिजाऊ

जिजाऊ असमंजस में फस गयी। कोई सरदार शिवबा को उससे मुक्त नहीं कर पा रहे थे। माँ ने अब स्वयं उसे मुक्त करने का निश्चय किया। सेना एकत्रित की। "मैं स्वयं जाऊंगी और जोहर का सिर काटकर लाऊंगी" हाथ में शस्त्र लेकर वह सिद्ध हुई। माँ नित्य ही संरक्षक ढाल बनकर बच्चों का संरक्षण करती है आज वह उसी भूमिका में रणरागिणी सी प्रतीत हो रही थी।

उसी समय विजापूर की ओर से नेताजी, सिद्दी हिलाल आये। आप स्वामी को छोडकर कायर जैसे यहाँ आये हो परंतु मैं विजय लेकर आऊंगी। जिजाऊ ने आवेश के साथ कहा। माँ का वह क्रुद्ध रुप देखकर नेताजी चकित हो गये। मै स्वयं जाकर महाराज की मुक्तता करता हूँ ऐसे वचन देकर उन्होंने माँ को रोक लिया।

आगे चलकर महाराज घेरा तोडकर विशालगड पहुंचे। बाजीप्रभु के पन्हाळा और विशालगड के बीच एक दर्रे के समीप सिद्दी के सेना को रोक लिया बाजी के

वीरमरण के कारण वह दर्रा पावनदर्रा कहलाने लगा। जिजाऊ का एक नेत्र शिवबा आने के कारण हंस रहा था और दूसरा बाजी के बलिदान में रो रहा था। विशुद्ध आनंद उसे बहुत ही कम मिला।

बीस वर्ष पश्चात्

जिजाऊ खुश थी। शिवबा उसका स्वराज्य का स्वप्न साकार कर रहा था। कल्याण के बहु की विदाई और रांझे पाटील को कड़ा शासन करने की दृढ़ता शिवबा ने दिखायी। अब राज्य की बहुबेटियाँ चैन की सांस ले रही थी। अपने स्वप्न को साकार करते समय निजिसुख का जिजाऊ विचार भी नहीं कर पायी। शहाजी राजे और उनकी 1641 के पश्चात् भेट तक नहीं हुई। बंगलोर में महाराज की दुसरी पत्नी तुकाई थी। बंगलोर में व्यंकोजी थे। त्यौहार-पर्व के समय उनके लिये वस्त्रप्रावरण अलंकर आदि भेजती रहती। इ.स. 1661 में आदिलशहा की अनुमति से शहाजी पत्नी-पुत्र को मिलने आये। जेजुरी में भेट हुई। जिजाऊ के लिये यह आनंदपर्व था। उनकी खुशी का ठिकाना न था। शहाजी पुणे, राजगड घूमकर आये। अनेक सूचनायें उन्होंने दी। कुछ दिन के पश्चात् वे कर्नाटक लौटे। जिजाऊ - शिवबा वारणा तक उन्हें विदा करने गये। पुत्र के यश पर पिताजी प्रसन्न थे।

सती जाने की सिद्धता

इस भेट के दो-तीन साल पश्चात् शहाजी राजे एक दुर्देवी अपघात में स्वर्लोक सिधर गये। स्वराज्य संकल्प का अंत हो गया। (माघ शु. 5 शके 1585-23 जानेवारी 1664) इतिहासकार शिवबा को स्वराज्यसंस्थापक व शहाजी को स्वराज्य संकल्पक कहते हैं। पतिनिधन का समाचार प्राप्त होते ही जिजाऊ सती जाने के लिये सिद्ध हुई।

"माँ-पिताजी तो हमेशा ही दूर थे। आज आप भी जा रही हो? हमारा पुरुषार्थ देखने के लिये कौतुक करने के लिये, ममता का हाथ फेरने के लिये कोई नहीं है माँ और अभीतक आपका स्वप्न पूर्ण नहीं हुआ है। माँ स्वराज्य को आप की आवश्यकता है।" शिवबाने माँ के पैर पकडकर अपने आसुओं से पैर भीगा दिये। तरह तरह से समझाकर उन्हें सती होने से रोका।

अपने ध्येय के लिये कर्तव्यपूर्ति के लिये जिजाऊ ने सती के वस्त्र दूर किये। पुत्रप्रीति स्नेह से वह जीवन व्यतीत करने लगी। परंतु नेत्र पैलतीर की ओर लगे हुए थे।

मनोरथ पूर्ण करनेवाले - सुपुत्र आप है

जिजाऊ का जीवन 'चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात' ऐसा था। आपत्तियाँ झेलने के लिये ही था। शहाजी की मृत्यु के तीन चार महिने पश्चात् आदिलशाह ने

समझौते की शर्तें भूलकर आक्रमण किया। खवासखान सेना लेकर आया। खान के साथ सावंत, बाजी घोरपडे मुधोळकर थे। समाचार मिलते ही जिजाऊ क्रुद्ध हुई, भौहे तन गयी। वह बडी स्वाभिमानी थी स्वत्त्वशील थी। यहीं वह बाजी था जिसने कपट से शहाजी को पकडा था और उनके पैरों में जंजीरे डालने में मदद करने का दुःसाहस किया था। अब वह अपने आप शिवबा की गुफा में आया था इसे मजा चखाना ही होगा।

शिवबा उस समय मंगूलर-बसनूर में जलसेना से चढ़ाई की तयारी में व्यस्त थे। जिजाऊ ने शीघ्र ही शिवबा को सावधानता का आदेश देते हुए उसे बाजी को सबक सिखाने का उसका पारिपत्य करने का आदेश दिया।

'बाजी घोरपडे मुधोळकर स्वधर्म साधन छोडकर यवन, दुष्ट तुरुक को साथ देकर आ रहा है। वहाँ जो कुछ हुआ वह गंभीर है यह आप जानते ही है। श्री परमेश्वर आपका मनोदय सिद्ध करेगा। स्वधर्म के आधार पर आप राज्यसंस्थापना कर रहे है इसलिये यश प्राप्त हुआ। अभी पुनः दुष्ट हेतु मन में रखकर खवासखान बिजापुर से सेना लेकर निकल पडा है। उनके साथ हरोळी बाजी, लखम सावंत एवं खेम सावंत ये भी प्रतिज्ञा करके आ रहे है। आपको श्रीसांब तथा अंबा निश्चित ही यश देंगे। इस समय शत्रू को घेर कर उनको पूर्णतः पराभूत करना है। मेरा मनोरथ पूर्ण करनेवाले सुपुत्र आप है यह विश्वास है।'

माँ का मनोदय शिवबाने पूर्ण किया। बाजी का प्रदेश लूटकर शिवबाने उसे यमलोक भेजा। खवासखान भाग गया। सावंत ने गोवेकर की शरण ली। परंतु शिवबाने उसे समझौता करने के लिये बाध्य किया। वीर क्षत्राणी के मनोरथ पूर्ण हुए।

माँ की सुवर्ण तुला

क्रोध नाम संवत्सर पौष अमावस्या शके 1586 सूर्य ग्रहण था उस दिन। माँ की इच्छा हुई प्रचुर मात्रा में दान करने की। पुत्र तत्पर था। दान-अनाज का किया जा सकता था, कपडों का किया जा सकता था। परंतु शिवबाने सोचा मेरी माँ तो अतुलनीय है - फिर भी विश्व में जो मूल्यवान माना जाता है - सुवर्ण - उसी के साथ क्यों न करु माँ की तुला - माँ की सुवर्ण तुला कितनी सुंदर कल्पना। स्थान निश्चित हुआ - महाबळेश्वर - महाराष्ट्र का कैलाश बारह ज्योर्तिलिंगो में से एको पंचनदियों का उद्गम स्थान। एक तराजू के एक पल्ले में माँ बैठी और पुत्र दुसरेमें सुवर्ण की मुहरें डाल रहा है। कितना मनोरम दृश्य। सुवर्ण का पल्डा भारी हुआ पश्चात वह सुवर्ण दान किया गया।

साधना का संबल

जिजाऊ ने महाबळेश्वर के वेदमूर्ति 'सूर्य उपासनी पद्महस्ती गोपाळभट्टजी' से मंत्रोपदेश लिया था, वह उपासना करती थी। मानो माँ की इस साधना की शक्ति शिवबा का अभेद्य संरक्षक कवच था। पुत्र के अभ्युदयार्थ प्रतिवर्ष जिजाऊ अनुष्ठान करवाती थी। सूर्यप्रीत्यर्थ अनुष्ठान करने के लिये 100 होन दिये जाते थे। समर्थ रामदासजी ने कहा ही है -

सामर्थ्य है आंदोलन का। जो जो करेगा ----

परंतु वहाँ चाहिये अधिष्ठान। परमेश्वर का -

इ.स. 1665 में माँ के स्वराज्यरुपी सूर्य को औरंगजेब राहू ने ग्रस लिया। स्वराज्य को ग्रहण लग गया। जयसिंग और दिलेरखान महाराष्ट्र में आये। उनका सामर्थ्य अपार था। दिलेरखान ने पुरंदर घेर लिया। शत्रुका सामर्थ्य ध्यान में लेते हुए समझौता किया गया 23 दुर्ग और 4.5 लाख 'होन' का प्रदेश औरंगजेब को दिया। उस के अतिरिक्त शिवबा औरंगजेब के पंचहजारी मनसबदार बनो इस मिर्झाराजे जयसिंग के आग्रह पर औरंगजेब को मिलने वे आग्रा जाने को तैयार हुए।

माँ ने स्वराज्य की डोर थाम ली

शिवबाने औरंगजेब की भेट होने का निश्चय किया। दो बाते थी एक मराठी और राजपूत इन में एकी के प्रयास (जयसिंग के माध्यम से) और दुसरा औरंगजेब के राज्य में जाकर हो सके तो वहीं युक्ति प्रयुक्ति से राज्य स्थापना के प्रयास करना। स्वयं औरंगजेब महाराष्ट्र में जाने के लिये तयार नहीं था। अतः महाराज स्वयं दिल्ली की ओर गये। यह बडा साहस था। शेर की गुफा में प्रवेश करने जैसा। दिल्ली की ओर प्रयाण करते समय शिवबाने राज्य की डोर माँ के हाथ में दी। हो सकता था बंदी बनना पडेगा, औरंगजेब के कपटी स्वभाव के अनुसार प्राण भी गवाने पडेंगे। अतः वे राजनीतिज्ञ, दृढनिश्चयी जिजाबाई को राज्य सौंपकर गये। कडताजी गुर्जर को प्रतापराव उपाधि देकर सेनापति बनाया, मोरोपंत पेशवे थे और निळोजी मुजुमदार तीन लोगों का प्रतिनिधि मंडळ स्थापन किया। नेतृत्व कर्तृत्वशालिनी जिजाऊ के पास था। अपनी मुहर शिवबाने माँ के स्वाधीन की। प्रतिनिधी मंडळ ने माँ की आज्ञा में रहकर काम करना है यह आग्रहपूर्वक बताया। सडसट वर्ष की आयु में जिजाऊ ने यह कार्यभार स्वीकार किया और अत्यंत साहसी ऐसी योजना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। बडा कठिन प्रसंग था स्वयं के पुत्र और माँ के पश्चात् 'नेत्र का दिया और हाथ का झुला बनाकर' जिसे पालापोसा - ऐसा संभाजी (पोता) दोनो भी मृत्यु के पिंजडे में जा रहे थे। दैववशात् कुछ उलटा सीधा हो गया तो राज्य की डोर संभालना था। हृदय में दुःख की आग को दबाते हुए जिजाऊ ने उन्हें विदा

किया। (फाल्गुन शुद्ध 9 शके 1587-5 मार्च 1666)। औरंगजेब के कैद में रहकर शिवबा 20/11/1666 लगभग आठ माह के पश्चात् बैरागी वेष में लौटे माँ सुखकर काँटा बन गयी थी। चिंता ने उसे व्याकुल बनाया था वह जानलेवा संकट से बचकर अपने सामने खडा हैं इस पर विश्वास भी नहीं कर पायी। यह कौन सन्यांसी आया हैं वह प्रणाम के लिये झुकी तो सन्यांसी ने उसे ऊपर के ऊपर ही उठाया - माँ यह क्या कर रही हो? इन शब्दों से वह चौक गयी -

माँ - पुत्र की भेट

मेरे शिवबा जैसी आवाज - गौर से देखा। माँ बेटे की आवाज़ पहचान गयी। वत्स से बिछडी गाय उसे देखते ही जैसी उसको सहलाती है वैसी ही जिजामाता की स्थिति हुई। मेरा शिवबा आया - पर संभाजी कहाँ है? माँ ने पूछा - वह सुरिक्षत है यह सुनकर आश्वस्त हो गयी।

शिवबा को पहचानने के पश्चात स्वराज्य के सभी गडों से तोपों के आवाज किये गये मिठाई बांटी गयी। दानधर्म किया महोत्सव मनाया गया। राजगड के लोग भावविभोर होकर नाच रहे थे एकदूसरों को बता रहे थे - शिवराय मुक्त हुए है, शिवराय मुक्त हुए है। कुछ माह पश्चात संभाजी भी लौटकर आये। हिंदवी स्वराज्य को लगा औरंगजेब का ग्रहण छूट गया।

शिवबा का आग्रा से पलायन को औरंगजेब देखता ही रहा। तीन दिन तक वह अपने कक्ष से बाहर नही निकला। विजापूरकर, डच, पौर्तुगीज भी भयभीत हुए और मराठे शिवबा को परमेश्वर मानने लगे।

माँ की प्रताडना

इस संदर्भ में एक कथा प्रचलित है। 23 किले ओरंगजेब को सौंपते समय शिवबा का हृदय दुःख से फट रहा था। स्वयं को उन्होंने एक महल में बंद कर लिया। माँ उन्हें समझाने हेतु उपस्थित हुई। शिवबा ने दरवाजा नही खोला।

माँ मैं मरना चाहता हूँ। लगता है मैं आत्महत्या कर लूँ।

जिजाऊ व्यथित हुई और क्रोधित भी 'शिवबा क्षत्रियों को मृत्यु कोई विशेष बात नहीं - हर क्षण वह उसके साथ आँखमिचौली खेलते रहता है। परंतु मृत्यु कैसा हो वीर मृत्यु हो तुम युद्धस्थलपर शत्रु को मारते हुए वीरमरण प्राप्त करो - आत्महत्या कायरों का लक्षण है। क्या इसीलिये आपने मुझे सती जाने से रोका। क्या आत्महत्या से हिंदवी स्वराज्य का स्वप्न साकार होगा? देवधर्म का रक्षण होगा, स्त्री का सम्मान होगा? यदि नहीं तो जिस से रक्षण होगा वहीं मार्ग अपनाओं। मेरे पुत्र कहलाओं। माँ की प्रताडना उसे सही मार्गपर लायी।'

दुसरी एक कथा बताती है की - एक बार शिवबा के मन में आया की मैं तपस्या करुं। विठ्ठल भजन में लग जाऊं। फिर एक बार माँ की कुशलता की कसोटी थी। माँ ने विविध तरह से समझाते हुए कहा - शिवबा तुम्हारा यह विचार हल को घोडा जोतने जैसा है। आजतक के प्रयास विफल हो जायेंगे। अपना नियत कर्म ही अपनी तपस्या है और शिवबा फिर से स्वराज्य कार्य में जुट गये।

कोंडाणा पर ध्वजा चढ़ी

जिजाऊ का मन एक अजीब रसायन था। अपने अपमान की छोटी-छोटी बातें उसके हृदय में दबी थी। माँ की आँखों में कोंडाणा का हरा झंडा खलता था। आप हमेशा राजगड पर रहती थी उसके ईशान्य में केवल 6 मीलों पर कोंडाणा था। शहाजी की मुक्तता के लिये वह विजापूरकरों को दिया था। एक तरह से शहाजी राजा के अपमान की स्मृति ही थी। वह किला स्वराज्य में आना चाहिये ऐसी उनकी बडी इच्छा थी। वह शिवबा को आग्रह करती थी कोंडाणा किला जीत लो स्वराज्य में संमीलित करो। यह कार्यभार तानाजी को सौंपा गया। पत्र देखते ही गड पर आने के लिये लिखा गया। तानाजी आया - उस समय अपने पुत्र रायबाजी के विवाह में व्यस्त था - परंतु माँ की आज्ञा प्राप्त होते ही 'प्रथम विवाह कोंडणा का कहते हुए यह वीर सेनासहित कोंडाणा पहुँचा गड स्वाधीन हुआ निशान बदला - परंतु माँ का पुत्र तानाजी चल बसा। 'गड आया पर सिंह गया।'

यह लोकोक्ती प्रसिद्ध है। माँ जैसी कर्तव्यकठोर थी वैसी वह प्रजा की छाया थी - उसने अपने पुत्र के साथ इन सब पर भी इतना प्रेम किया था उनके खाने-पीने से लेकर घरपरिवार की चिंता की थी - की माँ की इच्छा पूर्ण करने उन में होड लगती थी। इसलिये पुत्र के विवाह का कार्य अधुरा छोडकर तानाजी युद्ध के लिये सज्ज हुआ।

पाचाड में निवास

सन् 1671 से शिवाजी राजगड से रायगड रहने के लिये आये। रायगड की हवा ठंडी थी सतत वर्षा होती थी। जिजाऊ को वह सहन नहीं हो रही थी। अतः गड के तल में पाचाड गाव में जिजाऊ के लिये एक महल बनाया गया। वहाँ पहले से बाजार इत्यादि था। यही से सामान गड पर जाता था। शिवबा ने वहाँ के खर्चे की स्वतंत्र व्यवस्था की। नोकर, कारकून, दिवान, पंडित, दासीयाँ आदि नियुक्त किये। वहाँ वे पुराणश्रवण आदि धर्म कार्यों में मगन रहती थी। महाराज माँ को वंदन कर ही गड पर आते जाते थे।

राज्याभिषेक की तयारी

जिजाऊ के शरीर पर वार्धक्य के चिन्ह प्रकट हो रहे थे। शरीर थक गया था। उन्होंने 1642 से लेकर 1674 तक लगभग 32 वर्ष तक अविरत प्रयास किये। अपने आंचल से स्वराज्य की ज्योति सुरक्षित रखी थी। न ज्योति बुझने दी न स्वयं का पल्लू जलने दिया। स्वराज्य का स्वधर्म का बीज बोया था। वह अंकुरित हुआ था। उसका विशाल वृक्ष बना था। वह हजारों के लिये प्राणाधार था सुख की शीतल छाया था। शिवबा राजा जैसा तो था ही। छत्रपति यह नामाभिधान प्रजा ने उन्हें दिया था। उनकी स्वतंत्र राजमुद्रा थी। राज्य में सुखशांति थी। परंतु राज्याभिषेक नहीं हुआ था। अतः औरंगजेब उन्हें जमींदार समझता था। अदिलशाह उसको अपने सरदार का बगावत करनेवाला लडका मानता था। मोरे जैसे लोग कहते थे हम आप को राजा नहीं मानते। अतः प्राप्त किये हुए स्वराज्य को स्थिर बनाने के लिये सशास्त्र राजपद धारण करने की आवश्यकता थी। काशी के विद्वान पंडित गागाभट्टजी का आग्रह था कि राज्याभिषेक संस्कार बिना स्वराज्य की पूर्णता नहीं। अतः यथाविधी राज्याभिषेकपूर्वक सिंहासनारोहण करने का निश्चय हुआ।

हिंदु इतिहास का नया पर्व

हिंदुओं के इतिहास का नया पर्व प्रारंभ हुआ। वसंत ऋतु को अनोखी बहार आयी। भूमिने नवतेज धारण किया था। आनंद संवत्सर यथार्थ रुप में आनंद लेकर आया था। हिंदुपदपातशाही के स्थापना का सुवर्णक्षण प्राप्त हुआ। ज्येष्ठ शुद्ध त्रयोदशी शके 1596 को शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ। सप्त सरिताओं के जल से अभिषेक किया गया। रत्नजडित सिंहासन तयार हुआ। सिर पर छत्र धारण किया गया। उस सुवर्णछत्र से भी मातृछत्र का आनंद शिवबा के लिये अधिक था। माँ को प्रणाम करते हुए उन्होने कहा - आप के आशिर्वाद से मनोरथ पूर्ण हुए।

जिजाऊ को लगा मेरा जन्म सार्थक हुआ। इस क्षण की प्रतीक्षा में क्षण-क्षण बिताया था। अथक प्रयास किये थे। उसका सपना साकार होनेका यह मंगल क्षण था। उन्होंने शिवबा की अलाबला की आनंदाश्रु से उसे नहलाया। उनका शिवबा छत्रपति शिवाजी, क्षत्रिय कुलावतंस, सिंहासनाधीश्वर बन गया। गोब्राह्मण प्रतिपालक हिंदवी राजा बना। वास्तविक उसके असीम पुण्याई का यह फल था।

हिंदु इतिहास का यह भावभीना क्षण। यहाँ गर्व नम्र हुआ था और नम्रता को भी अभिमान हुआ था। हिंदुओं का स्वतंत्र सार्वभौम साम्राज्य लोकहितार्थ स्थापन हो सकता है ऐसा आत्मविश्वास निर्माण करनेवाला यह क्षण। माँ तृप्त थी फिर भी तानाजी, बाजी, नेताजी के स्मरण से आँखों में आसु थे। जिजाऊ के नेत्र धन्य हुए। और कान तृप्त हुए -

समर्थ राजदासजी की वाणी से। शिवबा के ही गुरु नहीं राष्ट्रगुरु रामदासजी गा रहे थे -

डुब गये सर्व ही पापी, हिंदु (स्थान) बलवान हुआ
अभक्तोंका नाश हुआ है, आनंदवन भुवन में
यहाँ से धर्म में हुई वृद्धि, रमा धर्म समागमें
संतोष हुआ बहुत ही। आनंद वन भुवन में
डुब गया औरंग्या पापी। म्लेंच्छ संहार हुआ।
भ्रष्ट क्षेत्र पुनः स्थापित किये। आनंदवन भुवन में
प्रभूत शब्द जल हुआ है अब, स्नानसंध्या कर्म करें
जपतप अनुष्ठान - आनंदवन भुवन में।

आज से एक नया शक प्रारंभ हुआ था। राज्याभिषेक शक। पंचांग में लिखा जाने लगा शिवशके। शिवबा के एवं राष्ट्रजीवन की इस युगप्रवर्तक घटना का नाम था राज्याभिषेक। अतः व्यक्ति के नाम से नहीं अपितु घटना का नाम देकर यह शक, प्रारंभ किया गया। व्यक्तित्व का राष्ट्रजीवन में संपूर्णतया विलय करनेका माँ का संस्कार अमिट था।

माँ का पाथेय

जिजाऊ ने स्वराज्य रक्षा के लिये 25 लक्ष होन शिवबा को दिये। स्वराज्य मंदिर के स्थैर्य के लिये मानों माँ ने अपना पाथेय - आशिर्वाद शिवबा की झोली में डाल दिया।

जिजाऊ का महाप्रयाण

राज्याभिषेक के दूसरे दिन माँ पाचाड में आयी। और 12 वे दिन यह तेजोशलाका तेजरुप हो गयी। शिवबा नहीं हिदुराज्य मातृविहिन हो गया। (ज्येष्ठ वद्य 9 शके 1596, 17 जून 1674।)

इतिहास के पन्नों-पन्नों पर जिजाबाई का उल्लेख हमें मातुश्री जिजाबाई, जिजाऊ आऊसाहेब, राष्ट्रमाता इस उपाधि से प्राप्त होता है। उसका अणुरेणु मातृत्व के गुणों से परिपूर्ण था।

मातृत्व - अर्थात् सृजनशीलता। संरक्षण एवं संवर्धन ये उस के विशेष है। जिजाऊ ने अपने अदम्य इच्छा शक्ति के कारण धर्मकार्यों की सुरक्षा के लिये अविरत प्रयास किये धर्म वृद्धि के लिये शुद्धिकरण जैसी प्रक्रियाओंको प्रवर्तन किया। हिंदु मन में आत्मविश्वास निर्माण कर सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय हिंदु साम्राज्य परमेश्वर इच्छा के अनुसार स्थापित किया। इसी लिये कहा जाता है -

आप नहीं होती तो

ना होते युगप्रवर्तक शिवाजी

हिंदु धर्म संस्कृति की

ना रहती निशानी।।

ना दिखती आंगन में तुलसी

ना बचते मंदिरों के कलश

ना जगती हिंदु अस्मिता

ना जगती राष्ट्र-समर्पण वृत्ति

पाचाड में एक छत्री के रुप में जिजाबाई का छोटासा स्मारक है। पास ही एक कुँआ है। पारतंत्र्य के विष से मृतवत् हुए हिंदु समाज को स्वातंत्र्य की संजीवनी देनेवाली माँ के स्मरणार्थ श्रांत थकेहरे तृषार्त की तृष्णा हरण कर उसे सतत जीवन देनेवाली सीढियों से युक्त ऐसा कुआँ हैं। चलें हम उसका जलपान करें संजीवनी प्राप्त करें।

धन्य जीजाई

स्वयं झुका है जिसके आगे हर क्षण भाग्यविधाता
धन्य-धन्य है धन्य जीजाई जगन्वंद्य माता ।।धृ.।।

जाधव कन्या स्वाभिमानिनी क्षत्रियकुल वनिता
शहा पुत्र शिवराज जननी तू, अतुलनीय नाता
माँ भवानी आराध्य शक्ति ये, तुझको बल मिलता ।।1।।

राज्य हिंदवी स्वप्न युगो का, मावल अंतर में
अश्व टाप शिव सैन्य कांपती मुगल सलतनत मन में
अमर हो गई तब वचनों हित सिंहगढ़ की गाथा ।।2।।

हर हर हर हर महादेव हर घोष गगन गुंजा
महापाप तरू अफजल खाँ पर प्रलय काल टूटा
मूर्तिभंजक अरिशोणित से मातृचरण धुलता ।।3।।

छत्रपती का छत्र देखकर तृप्त हुआ तनमन
दिव्य देह का स्पर्शमात्र से सार्थ हुआ चंदन
प्रेरक शक्ति बनी हर मन की जीवन जन सरिता।।

सूर्य के पहले अभिवादन करें पूर्व दिशा को
शिवबा से पहले अभिवादन जिजामाता को

In one word, she had the head of a man
over the shoulders of a woman.
She remained a guide, philosopher and
friend to
Shivaji throughout her life.
She anxiously watched the rising sun of the
glory of the son and was fortunate to
witness its climax in the form of his
coronation as an independent king
and an ornament of the
Kshatriya race...

- डॉ. बालकृष्ण

जय जिजा

घोष आज, घोष आज, जय जिजा करे
जय जिजा करे
नभोवितान व्याप्त कर निनाद फिर भरे
निनाद फिर भरे
जय जिजा, जय जिजा, जय जिजा ।।धृ.।।

युगंधरा प्रभू शिवा की वीर जननि तू
वीर शहाजी की वीर धर्मपत्नि तू
जय जिजा सुपावनी तेजदीप्ति तू
तेज दीप्ति तू, तेज दीप्ति तू
जय जिजा, जय जिजा
जय जिजा ।।1।।

राष्ट्र अस्मिता जगाति दिव्यस्फूर्ति तू
कृष्ण घनघटा में दामिनी चमकति तू
दास्य अंधकार में जलाई ज्योति तू
दीप ज्योति तू, दीप ज्योति तू
जय जिजा, जय जिजा
जय जिजा ।।2।।

शुभंकरी शिवाई की दिव्य शक्ति तू
स्नेह, त्याग, शौर्य, तेज धैर्यमूर्ति तू
स्वराज्य शैल पर चढ़ी ध्वजा सुकीर्ति तू
ध्वजा सुकीर्ति तू, ध्वजा सुकीर्ति तू
जय जिजा, जय जिजा,
जय जिजा ।।3।।

किंमत : १५/- रु.

मुद्रक : एम्. प्रिन्टस् , 190, धंतोली, नागपूर - 12 दूरभाष : 2426182